"गुप्तकाल की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, कला एवं साहित्य की स्थिति"

B.A. SEMESTER–II Paper C.C3

मौर्य वंश के पतन के बाद दीर्घकाल में हर्ष के शासनकाल तक भारत में राजनैतिक एकता स्थापित नहीं रही। कुषाण एवं सातवाहनों ने देश में राजनैतिक एकता लाने का प्रयास किया। मौर्योत्तर काल के उपरांत तीसरी शताब्दी ई० में तीन प्रमुख राजवंशों का उदय हुआ, जिसमें मध्य भारत में नागशक्ति, दक्षिण में वाकाटक तथा पूर्वी भारत में गुप्त वंश प्रमुख है। मौर्य वंश के पतन के बाद नष्ट हुई राजनैतिक एकता को पुनः स्थापित करने का श्रेय गुप्त वंश के शासकों को जाता है। गुप्त साम्राज्य का उदय तीसरी शताब्दी के अंत में प्रयाग के निकट कौशांबी में हुआ था। गुप्त वंश का संस्थापक श्रीगुप्त था। गुप्तवंश के दो प्रसिद्ध शासक समुद्रगुप्त तथा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य रहे, जिनके शासनकाल के दौरान गुप्त साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा।

गुप्तकालीन सामाजिक स्थिति

गुप्तकालीन भारतीय समाज परंपरागत चार जातियों में विभक्त था।
(i) ब्राह्मण (ii) क्षत्रिय (iii) वैश्य (iv) शूद्र।

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में तथा वराहमिहिर ने वृहतसंहिता में चारों वर्णों के लिए अलग-अलग विशेषणों का बखान किया है।

न्याय संहिताओं में यह उल्लेख मिलता है कि ब्राह्मण की परीक्षा तुला से, क्षत्रिय की परीक्षा अग्नि से, वैश्य की परीक्षा जल से तथा शूद्र की विष से की जानी चाहिए।

पहले की तरह ब्राह्मणों का इस समय भी समाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। गुप्त काल में जाति प्रथा उतनी जटिल

नहीं रह गई थी, जितनी परवर्ती काल में। क्षत्रिय को राजा की जाति माना जाता था।

चीनी यात्री फाह्यान ने गुप्तकालीन समाज में अस्पृश्य (अछूत) जाति के होने की बात कही है। इन्हें 'चांडाल' कहा गया है। गुप्तकाल में लेखकीय, गणना, आय-व्यय का कार्य करने वाले वर्ग को 'कायस्थ' कहा गया।

गुप्तकाल में अनेक मिश्रित जातियों का भी उल्लेख मिलता है, जैसे अम्बष्ठ, पराशव एवं उग्र इत्यादि। गुप्तकाल में स्त्रियों की दशा में लगातार गिरावट आई। सभी स्मृतिकारों ने बाल-विवाह पर जोर दिया। विधवाओं को दुबारा विवाह करने की अनुमति नहीं थी। सती प्रथा की शुरुआत गुप्त काल में ही हुई थी। पहला सती स्मारक एरण, मध्य प्रदेश में भानुगुप्त का है, इसका समय 510 ई० का है।

गुप्तयुगीन आर्थिक जीवन → गुप्तराजाओं का शासनकाल आर्थिक दृष्टि से संपन्नता का प्रतीक था। कृषि की उन्नति पर विशेष ध्यान दिया गया।

कालिदास ने कृषि तथा पशुपालन को राष्ट्रीय आय का एक बड़ा स्त्रोत माना। धान, गेंहू, गन्ना, जूट, तिलहन, कपास, मसाले, धूप, नील आदि प्रचुर मात्रा में उत्पादित होते थे। इसके अतिरिक्त हाथी दांत की वस्तुएं बनाना, मूर्तिकारी, चित्रकारी, शिल्पकार्य, जहाजों का निर्माण आदि इस समय के महत्वपूर्ण उद्योग-धंधे थे।

इस समय बंगाल में 'ताम्रलिप्ति' प्रमुख बंदरगाह था जहां से चीन, लंका, जावा, सुमात्रा आदि देशों के साथ व्यापार होता था।

स्थल मार्ग द्वारा भी यूरोप के साथ भारत का व्यापार होता था। कपड़े, बहुमूल्य पत्थर, गरम मसाले, नारियल, नील, दवाएं आदि निर्यात की प्रमुख वस्तुएं थी। व्यापारी एक स्थान से दूसरे स्थान को माल लेकर जाते समय समूह में चलते थे। इसे 'सार्थ' तथा इसके नेता को 'सार्थवाह' कहा जाता था। व्यापारियों की समिति भी

Scanned with CamScanner

होती थी, जिसे निगम कहा जाता था। निगम का प्रधान 'श्रेष्ठि' कहलाता था।

गुप्तकालीन धर्म → गुप्त साम्राज्य को ब्राह्मण धर्म व हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान का समय माना जाता है। मूर्तिपूजा गुप्तकाल में हिन्दू धर्म की महत्वपूर्ण विशेषता बन गई। यज्ञ का स्थान उपासना ने ले लिया एवं गुप्त काल में ही वैष्णव एवं शैव धर्म के मध्य समन्वय स्थापित हुआ। ईश्वर भक्ति को महत्व दिया गया। तत्कालीन महत्वपूर्ण संप्रदाय के रूप में वैष्णव एवं शैव संप्रदाय प्रचलन में थे। वैष्णव धर्म गुप्त शासकों का व्यक्तिगत धर्म था। अनेक गुप्त शासकों ने 'परमभागवत' की उपाधि धारण की। चंद्रगुप्त II एवं समुद्रगुप्त द्वारा जारी किये गये सिक्कों पर विष्णु के वाहन 'गरुड़' की आकृति खुदी मिलती है। गुप्तकालीन महत्वपूर्ण अभिलेख स्कंदगुप्त का जूनागढ़' एवं बुधगुप्त का 'एरण अभिलेख विष्णु-स्तुति से ही प्रारंभ हुए हैं। 'अवतारवाद' वैष्णव धर्म का प्रधान अंग था।

गुप्तकालीन कला - गुप्तकाल की वास्तुकृतियों में मंदिर निर्माण का ऐतिहासिक महत्व है। इस काल की वास्तुकला को सात भागों में विभाजित किया जा सकता है - राजप्रसाद, आवासीय, गृह, गुहाएं, मंदिर, स्तूप, विहार तथा स्तंभ। गुप्तकाल में प्राचीनतम गुहा मंदिर निर्मित हुए। ये भिलसा, (मध्यप्रदेश) के समीप उदयगिरि की पहाड़ियों में स्थित हैं। ये गुहाएं चट्टान काटकर निर्मित हुई थी। उदयगिरि के अतिरिक्त अजंता, एलोरा, औरंगाबाद और बाघ की कुछ गुफाएं गुप्तकालीन हैं। इस काल में मंदिरों का निर्माण ऊंचे चबूतरों पर हुआ।

गुप्तकाल में मूर्तिकला के प्रमुख केंद्र मथुरा, सारनाथ और पाटलिपुत्र थे। गुप्तकाल चित्रकला का स्वर्ण युग था। कालिदास

Scanned with CamScanner

रचनाओं में चित्रकला के विषय के अनेक प्रसंग हैं। गुप्तकालीन वास्तुकला के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण, उदयगिरि का विष्णु मंदिर, नचना कुठार का पार्वती मंदिर तथा देवगढ़ का दशावतार मंदिर है।

गुप्तकालीन साहित्य तथा विज्ञान - गुप्तकाल में साहित्य का सर्वाधिक विकास हुआ। संस्कृत राजभाषा थी। गुप्तकाल में सबसे अधिक ख्याति कालिदास की कृतियों ने प्राप्त की। कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' विश्व की उत्कृष्टम साहित्यिक रचनाओं में से एक है। यह प्रथम भारतीय रचना है जिसका अनुवाद यूरोपीय भाषा में हुआ।

इस काल में पाणिनी और पतंजलि के ग्रंथों के आधार पर संस्कृत व्याकरण का भी विकास हुआ। 'अमरकोश' का संकलन अमर सिंह ने किया। भारवि ने प्रसिद्ध 'किरातार्जुनियम' की रचना की।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी - गुप्तकाल में अंकगणित, ज्योतिष, रसायन, धातु विज्ञान आदि का सम्पक विकास हुआ।

प्रसिद्ध गणितज्ञ आर्यभट्ट ने गणित के विविध विषयों का प्रतिपादन किया तथा यह बताया कि पृथ्वी अपनी धुरी के चारों ओर परिक्रमा करती है। ब्रह्मगुप्त का 'ब्रह्म सिद्धांत' खगोलशास्त्र का प्रसिद्ध ग्रंथ है। धन्वन्तरि तथा सुश्रुत इस काल के प्रसिद्ध चिकित्सक थे। चरक ने 'चरक-संहिता' लिखी। लौह तकनीक का सबसे अच्छा उदाहरण दिल्ली में मेहरौली स्थित 'लौह स्तंभ' है, जिसका निर्माण ईसा की चौथी सदी में हुआ। इसके अतिरिक्त विशाखदत्त की मुद्राराक्षस गुप्त काल के प्रसिद्ध ग्रंथ है।

Rajesh Kumar Singh.
Asst. Professor, (History)
D.S.P.M.U.

Scanned with CamScanner